OPEN MARKET OPERATIONS (Part-B)

खुले बाजार की नीति की सफलता के मार्ग में कठिनाइयाँ :-

सर्वप्रथम तो कभी-कभी प्रतिकूल कारणों से चलन की मात्रा एवं व्यावसायिक बैंकों के नकद कोष में केन्द्रीय बैंक द्वारा प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय के अनुपात में परिवर्तन नहीं भी होता है। उदाहरण के लिए, पूँजी के Outflow of Capital या अन्य कारणों से प्रतिकूल भुगतान संतुलन या छुपा कर रखने के लिए नोटों के माँग आदि के कारण बैंक द्वारा प्रतिभूतियों के क्रय का बैंक-मुद्रा के प्रसार पर बिल्कुल प्रभाव नहीं पड़ता। इसके ठीक विपरित प्रतिभूतियों के विक्रय का प्रभाव अनुकूल भुगतान संतुलन या छुपी नोटों के चलन में आने के कारण बिल्कुल प्रभावहीन हो सकता है। अतः इस सम्बन्ध में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि केन्द्रीय बैंक द्वारा उसके वास्तविक प्रभाव का पूरा अंदाजा नहीं लगता।

दूसरी कठिनाई यह है कि व्यावसायिक बैंक भी बहुधा अपने नकद कोष की मात्रा में परिवर्तन के अनुसार अपने जमा अथवा साख में परिवर्तन नहीं करते। अतः नकद कोष में वृद्धि के फलस्वरूप साख की मात्रा में प्रसार नहीं करते यानि व्यावसायिक बैंक बढी हुई नकद मुद्रा का पूर्णरूप से उपयोग नहीं करता। या इसके विपरित जब इसका कोष कम हो जाता है तो ये साख में

Scanned with CamScanner

कभी नहीं करते।

इस प्रकार ऐसी स्थिति में भी केन्द्रीय बैंक की खुली बाजार नीति बहुधा असफल सिद्ध हो जाती है। किन्तु केवल व्यावसायिक बैंक ही कभी-कभी अपने बढ़े हुए नकद कोष का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं करते, वरन् यदा-कदा ऐसा भी होता है कि उत्सुक तथा योग्य ग्रहणी की भी कमी रहती है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक अथवा आर्थिक अनिश्चितता के समय साहसी जोखिम उठाने के लिए तैयार नहीं होते। अतः ऐसी स्थिति में साधारणतया कम सूद की दर पर भी ये ऋण लेने के लिए तैयार नहीं होते। मंदी के समय भी यदि केन्द्रीय बैंक इस नीति के सहारे बैंकों के कोष में प्रसार कर बैंक-मुद्रा की मात्रा में वृद्धि करना चाहे तो बैंक-मुद्रा की माँग में कमी के कारण इस प्रसार में निश्चय ही बहुत कठिनाई होगी।

क्रमशः